



॥ ॐ ह्रीं श्री कल्याण पार्श्वनाथ स्वामिने नमः ॥

॥ श्री आत्म-वल्लभ-समुद्र-इन्द्रदिन्न-रत्नाकर सूरिश्वर सद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ वर्तमान पट्टधर गच्छाधिपति श्रुतभास्कर आचार्य श्रीमद् धर्मधुरन्धर सूरिश्वर सद्गुरुवे नमः ॥

भगवान महावीर स्वामी जी के 2550वें निर्वाण कल्याणक निमित्ते (भाग-3)



द्वैत पाठशाला

8-16 साल के बालक बालिकाओं के लिए

शुभ आशीर्वाद प्रदाता

गुरु आत्म-वल्लभ-समुद्र-इन्द्रदिन्न-रत्नाकर सूरि म.सा. के पट्टधर वर्तमान गच्छाधिपति श्रुतभास्कर, सरस्वती उपासक, श्रुतज्ञान मंदिर संरक्षक, आत्मकुल दिवाकर, शेरे गुजरांवाला

जैनाचार्य श्रीमद् विजय धर्मधुरन्धर सूरिश्वर जी म.सा.

सद्प्रेरणा : गणिवर्य श्री धर्मरत्न विजय जी म.सा.

शुभ निश्रा प्रदाता : प.पू.प्रवर्तनी साध्वी श्री अभय श्री जी म.सा. की सुशिष्या
साध्वी श्री कल्पज्ञा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-6

आयोजक : भगवान श्री कल्याण पार्श्वनाथ जैन नवयुवक मण्डल, लुधियाना

संचालन समिति : श्री कल्याण पार्श्वनाथ जैन मन्दिर , किचलू नगर, लुधियाना
निवेदक : श्री आत्मानन्द जैन सभा (रजि.) लुधियाना



नवकार मंत्र

नमो अरिहंताणं

अरिहंत भगवंतों को नमस्कार हो।



नमो सिद्धाणं

सिद्ध भगवंतों को नमस्कार हो।

नमो आयरियाणं

आचार्य महाराजों को नमस्कार हो।

नमो उवज्झायाणं

उपाध्याय महाराजों को नमस्कार हो।

नमो लोए सव्वसाहूणं

लोक में विद्यमान सब साधु महाराज को नमस्कार हो।

एसो पंच-नमुक्कारो

इन पांचों को किया हुआ नमस्कार

सव्व-पावप्पणासणो

सर्व पापों का नाश करने वाला है।

मंगलाणं च सव्वेसिं

और सब मंगलों में,

पढमं हवइ मंगलं

यह प्रथम अर्थात् श्रेष्ठ मंगल है।



गुरु स्तुति

भवोदधि-तारणपोत, मात त्रिशलासुत वंदो ।
हे जी, तपागच्छ- श्रीकार, पाट वंदी आणंदो ॥

परतिख शारदपूत, आतमानंद सूरिरायो।
हे जी, मिथ्यामत परिहार, शुद्ध मारग अपनायो ।।

युगद्रष्टा कोहिनूर, विजय वल्लभ सूरिराजे ।
हे जी, जिनआणाप्रतिबद्ध, सुजस महीतल गाजे ॥

निर्मल निश्चल संत, समुद्र सूरि जग सोहे ।
हे जी, समता साधक गुरुराय, मुक्ति-सोपान आरोहे ॥

क्षत्रियकुल-प्रतिबोध, वीर वाणी प्रसरावे ।
हे जी, इन्द्रदिन्न सूरिदेव, जयकमला जग पावे ॥

तस पट्टे केसरी सिंह, रत्नाकर सूरि प्रतापी ।
हे जी, प्रखर संयम तपतेज, शिथिलता थर-थर कांपी ॥

संप्रति धर्मधुरंधर, चउविहसंघ धुरा-धोरी ।
हे जी, जयवंत सुधर्मापाट, 'आशिष' मांगे कर जोरी॥



तीर्थंकर को पहचानों Know Our Trthankar

तीर्थंकर कौन हैं

- तीर्थंकर धर्म बताने वाले आध्यात्मिक गुरु हैं
- तीर्थंकर हमें मोक्ष का मार्ग बताते हैं ।
- तीर्थंकर साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका रूपी तीर्थ के संस्थापक हैं

वीतरागी (Vitraagi)

- तीर्थंकर की प्रतिमा क्रूर नहीं होती, शांत होती है।
- तीर्थंकर शस्त्र नहीं रखते ।
- तीर्थंकर राग-द्वेष मुक्त होते हैं
- तीर्थंकर की प्रतिमा के साथ कभी कोई स्त्री नहीं होती ।



केवलज्ञानी (Kevalgyani)

- तीर्थंकर को दुनिया में प्रत्येक वस्तु का ज्ञान होता है ।
- तीर्थंकर को भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य काल का संपूर्ण ज्ञान होता है ।



मूर्ति (Idol)

- तीर्थंकर की मूर्ति मुख्यतः पदमासन और काऊसग्ग मुद्राओं में होती है ।
- तीर्थंकर की मूर्ति के साथ परिवार भी होता है।
- उनकी मूर्ति को लंछन से पहचान सकते हैं ।
- सभी तीर्थंकरों के लंछन भिन्न होते हैं।



अष्ट प्रतिहार्य (8 Pratiharya)

2

सुरपुष्प वृष्टि
(Sur Pushpa Vrushti)



1

अशोक वृक्ष
(Ashok Vruksh)



3

दिव्य ध्वनि
Divya Dhvani



7

देव दुंदुभी
(Dev Dundubhi)



6

छत्र
(Chhatra)



5

भामंडल
(Bhamandal)



4

चामर
(Chamar)

8

सिंहासन
(Sinhasan)



केवल ज्ञान के
बाद 8 प्रतिहार्य
सदैव तीर्थंकर के
साथ ही रहते हैं



जैन साधु का जीवन

Jain Sadhu does not have any permanent Address

घर (House)

- जैन साधुओं का अपना स्थायी घर नहीं होता। वे उपाश्रय में रहते हैं।



भोजन (Food)

- जैन साधु खाना नहीं बनाते, वे गोचरी के लिए घर घर जाते हैं।
- वे उबाला हुआ पानी पीते हैं।
- वे सूर्योदय के पहले और सूर्यास्त के बाद नहीं खाते पीते
- वे भोजन के लिए लकड़ी से बने बर्तन (पात्रा) का उपयोग करते हैं।

They drink boiled water



वस्त्र (Cloths)

- जैन साधु बिना सिलाई वाले साफ कपड़े पहनते हैं।
- वे रजोहरण (ओघा) से छोटे जीवों को बचाते हैं।
- वे बोलते समय मुंहपत्ति का उपयोग करते हैं।
- वे संथारा और उत्तरपट्टा पर सोते हैं।
- वे अपने बालों को लोच करके निकालते हैं।





Life Style of Jain Sadhu



They do not use any vehicles such as car, bus, train etc.

They do Loch to remove their hair



Travel

- जैन साधु एक जगह से दूसरी जगह पैदल चलकर जाते हैं। उसे विहार कहते हैं।
- वे कभी कोई वाहन जैसे कि गाड़ी, बस, रेलगाड़ी आदि का उपयोग नहीं करते।
- वे बारिश के मौसम (चातुर्मास) में जीव रक्षा हेतु एक जगह पर ही रहते हैं।



Life

- जैन साधु सुबह जल्दी उठते हैं और भगवान महावीर के बताए हुए मार्ग पर चलते हैं।
- वे धार्मिक पुस्तकें पढ़ते हैं।
- उनमें प्रेम, करुणा और पवित्रता होती है।
- वे प्रवचन देते हैं और हमें अच्छी-अच्छी बातें सिखाते हैं।



They are Full of Love Compassion and purity





14 स्वप्न

च्यवन कल्याणक के समय तीर्थंकर
की माता 14 शुभ स्वप्न देखती है

1



गजराज
Elephant

14 स्वप्न

14 Auspicious
Dreams

3



केसरी सिंह
Lion

2



वृषभ (Bull)

6



चंद्र (Full Moon)

4



लक्ष्मी माता
Goddess Laxmi

5



फूलों की माला
Garland of Flowers

7



सूर्य (Sun)





14 स्वप्न

च्यवन कल्याणक के समय तीर्थंकर
की माता 14 शुभ स्वप्न देखती है

8



ध्वज
Dhwaj

14 स्वप्न

14 Auspicious
Dreams

10



पद्म सरोवर
Padma Sarowar

9



पूर्ण कलश
(Purna Kalash)

13



रत्नराशि
(Heap of Gems)

11



रत्नाकर
Ratnakar

12



देव विमान
Dev Viman

14



अग्निशिखा
(Agni Shikha)





अष्टमंगल

8 शुभ प्रतीकों
का समूह है

1



दर्पण
Mirror

2



भद्रासन
(Throne)

3



वर्धमानक
Vardhamanak

4



कलश
Kalash

6



श्रीवत्स
(Shrivatsa)

5



मीन युगल
Pair of Fish

8



नंदावर्त
(Nandavarta)

7



स्वस्तिक
(Swastik)

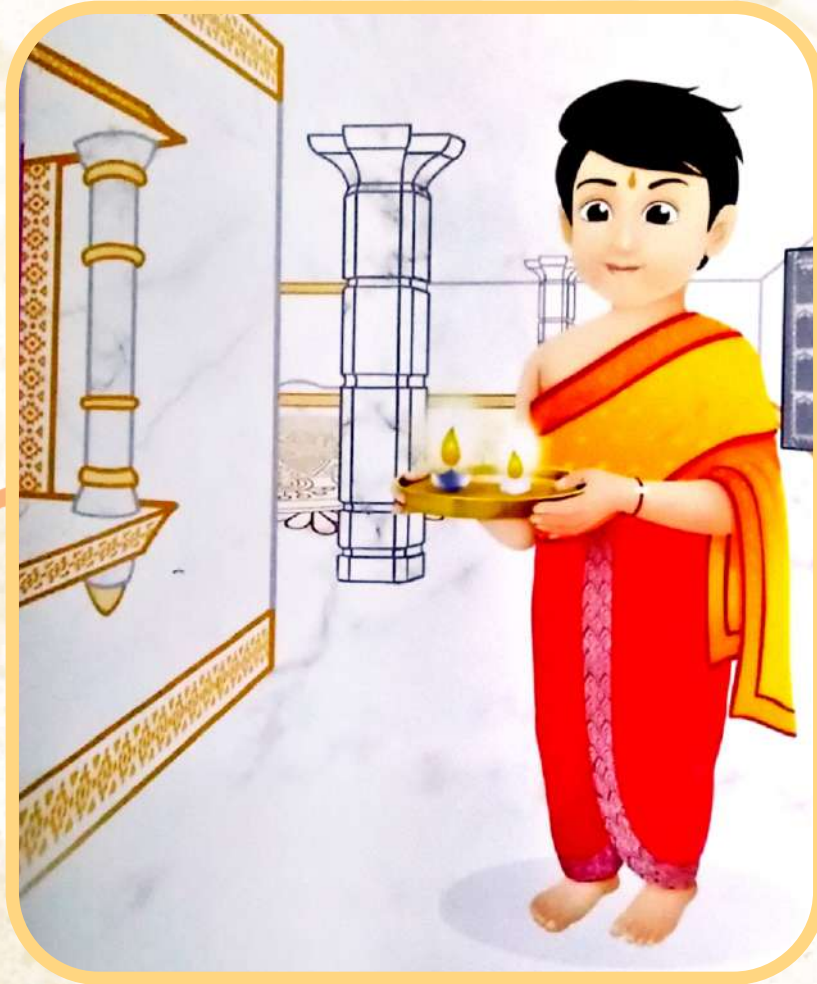


प्रदक्षिणा के दोहे Pradakshina Ke Dohe

काल अनादि अनंत मे, भव भ्रमण नो नहीं पार
ए भव भ्रमण निवारवा, प्रदक्षिणा देऊं त्रण बार ॥

भमतिमां भमता थकां, भव भावठ दूर पलाय
दर्शन-ज्ञान-चरित्र रूप, प्रदक्षिणा त्रण देवाय ॥

दर्शन-ज्ञान-चरित्र ए, रत्नत्रयी शिवद्वार
त्रण प्रदक्षिणा ते कारणे भवदुःख भंजनहार ॥





पूजा के प्रकार Types of Puja

1. द्रव्य पूजा

चंदन पूजा



अंग पूजा
जो पूजा भगवान
को स्पर्श करके
होती है

पुष्प पूजा



जल पूजा



धूप पूजा



फल पूजा



अग्र पूजा

जो पूजा भगवान को बिना
स्पर्श किए (सामने रहकर)
की जाती है



नैवेद्य पूजा



अक्षत पूजा



दीपक पूजा

2. भाव पूजा

भाव पूजा द्रव्य पूजा के बाद की जाती है और वह
भावों की शुद्धता में वृद्धि कराती है। भाव पूजा में
चैत्यवंदन, स्तुति, स्तवन आदि का समावेश होता है।

चैत्यवंदन





दर्शनविधि



2.

पहली निसीहि

जिन मंदिर के मुख्य दरवाजे में प्रवेश करते समय 'निसीहि' बोलें और फिर घर के विचार ना करें



1.

नमो जिणाणं

जब जिन मन्दिर, शिखर या ध्वजा दिखे तब दोनों हाथ जोड़कर मस्तक झुकाकर 'नमो जिणाणं' बोलें।



3.

नमो जिणाणं

भगवान के दर्शन होने पर मस्तक झुकाकर 'नमो जिणाणं' बोलें।



नमो जिणाणं
नमो जिणाणं
नमो जिणाणं



दर्शनविधि



7.

द्रव्य पूजा

हमें प्रभुजी के सामने धूप-दीपक
पंखा, दर्पण और चामर
करना चाहिए।



8.

तीसरी निसीहि

चैत्यवंदन करने
से पहले तीसरी
निसीहि बोलें।

9.

पच्चक्खाण

हमें यथाशक्ति पच्चक्खाण
लेना चाहिए।





दर्शनविधि



10.

भंडार

भंडार में पैसे भरें

11.

घंटनाद

घंटनाद करके प्रभुजी
की ओर पीठ ना करके
मंदिर जी से बाहर निकलें



12.

आवस्सही

बाहर निकलते समय मंदिरजी
के मुख्य दरवाजे पर 'आवस्सही'
तीन बार बोलना चाहिए।





जीवों के प्रकार Types of Living Beings

जिन जीवों को
एक इन्द्रिय होती है
(स्पर्शनेन्द्रिय)

एकेन्द्रिय जीव

One Sensed Beings



पृथ्वीकाय (पृथ्वी शरीर वाले जीव)
Earth Bodied Beings



अपकाय (जल शरीर वाले जीव)
Water Bodied beings



तेउकाय (अग्नि शरीर वाले जीव)
Fire Bodied Beings



वाउकाय (वायु शरीर वाले जीव)
Air Bodied Beings



वनस्पतिकाय (पौध शरीर वाले जीव)
Plant Bodied Beings



बेइन्द्रिय जीव Two Sensed Beings

जिन जीवों को
दो इन्द्रिय होती है
(स्पर्शनेन्द्रिय
रसनेन्द्रिय)



केंचुआ
Earthworms

शंख
Shankh



सीप
Shells



तेइन्द्रिय जीव Three Sensed Beings

जिन जीवों को
दो इन्द्रिय होती है
(स्पर्शनेन्द्रिय
रसनेन्द्रिय)



चींटी
Ants

खटमल
Bedbugs



धोंधा
Snail



चउरिन्द्रिय जीव Four Sensed Beings

जिन जीवों को
दो इन्द्रिय होती है
(स्पर्शनेन्द्रिय
रसनेन्द्रिय)



तितली
Butterfly

खटमल
Bedbugs



धोंधा
Snail



पंचेन्द्रिय जीव

Five Sensed Beings

जिन जीवों को
पांच इन्द्रिय होती है
(स्पर्शनेन्द्रिय+रसनेन्द्रिय
+घ्राणेन्द्रिय+चक्षुरिन्द्रिय
+श्रोत्रेन्द्रिय)



पशु
Animals

पक्षी
Birds



इंसान
Humans



नारक
Narak



देवता
Devatas





सिद्धचक्र (Siddhachakra)



देव तत्व		
नाम	वर्ण	गुण
अरिहन्त	सफेद	12
सिद्ध	लाल	8

गुरु तत्व		
नाम	वर्ण	गुण
आचार्य	पीला	36
उपाध्याय	हरा	25
साधु	काला	27

धर्म तत्व		
नाम	वर्ण	गुण
दर्शन	सफेद	67
ज्ञान	सफेद	51
चरित्र	सफेद	70
तप	सफेद	50

पंचपरमेष्ठि गुण

अरिहन्त		सिद्ध	आचार्य		उपाध्याय		साधु		कुल	
12	+	8	36	+	25	+	27	=	108	



चरित्र के उपकरण Charitra Upkaran

साधु के उपकरण



ओघा



मुहपत्ति



पोथी सापड़ा



स्थापनाचार्य



पात्रा



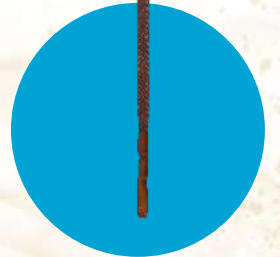
घड़ा



तरपणी



चेतना



दंडा



बटवा



सूपड़ी-पूजणी



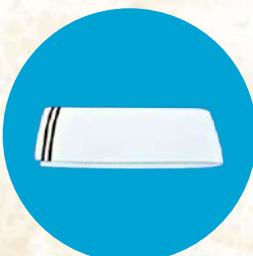
पुस्तक



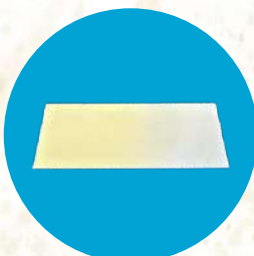
नवकारवाली



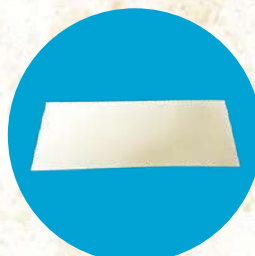
कामली



आसन



संधारा



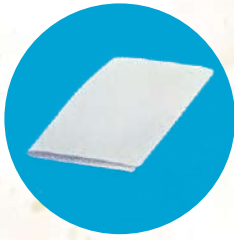
चोलपट्टा



दंडासन



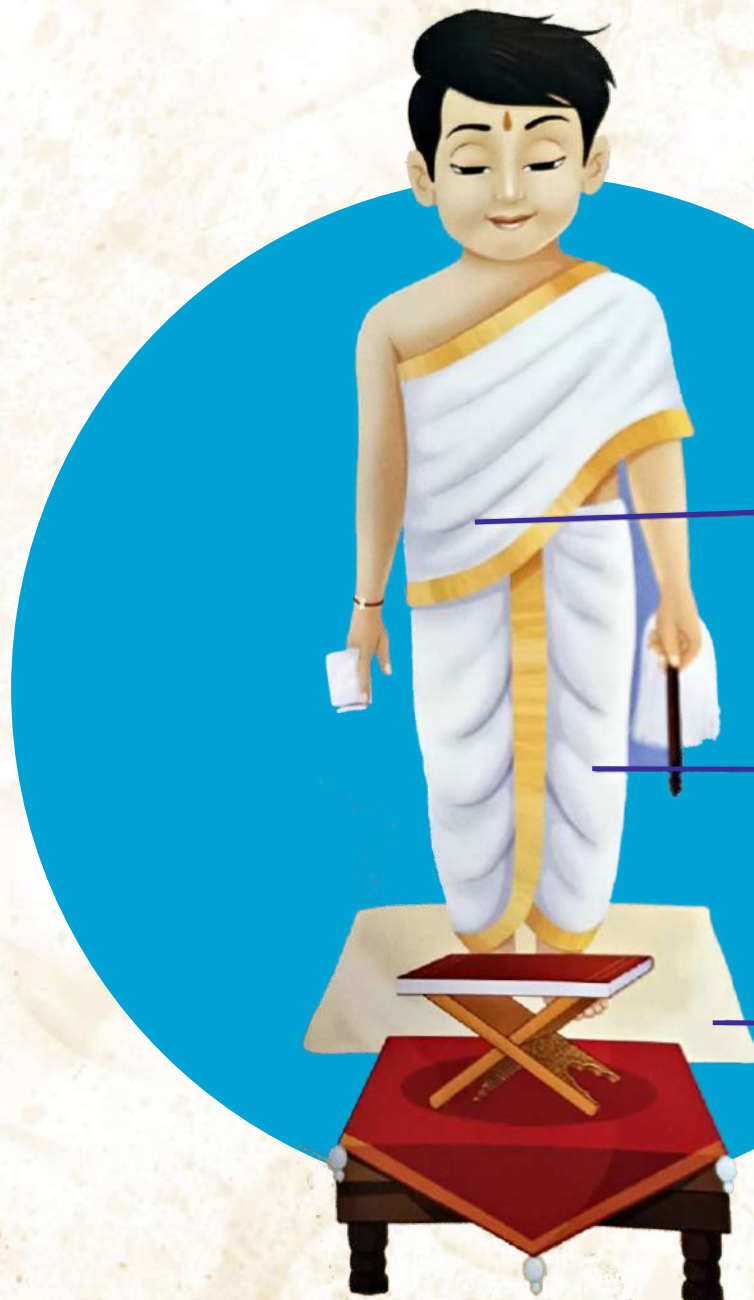
श्रावक के उपकरण



साधु के उपकरण



नवकारवाली



सामायिक
का खेस

सामायिक
का धोती

कटासना

स्थापनाचार्यजी



भाव-पूजा

खमासमण सूत्र

इच्छामि खमासमणो । वंदितं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।

इरियावहियं सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग पणग दगमट्टी मक्कडा संताणा-संकमणे। जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्विया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तरस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तरस्स उत्तरी सूत्र

तरस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घाय णट्टाए, ठामि काउरसग्गं ॥

अन्नत्थ (आगार) सूत्र

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय- निसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए। सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं। एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउरसग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि। ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अन्नत्थ सूत्र पढ़ते हुए एक 'लोगस्स' का 'चंदेसु निम्मलयरा' तक या चार नवकार काउसग्ग करिये)



લોગસ્સ (નામ-સ્તવ) સૂત્ર

લોગસ્સ ડજ્જો ડગરે, ઢમ્મતિત્થયરે જિણે।

ઑરિહંતે કિત્તઙ્ગસ્સં, ચડવીસં પિ કૈવલી॥ 1॥

ડસશ્રમજિઙ્ગં ચ વંદે, સંશ્રવમશ્રિણંદણં ચ સુમઙ્ગે ચ।

પડમપ્પહં સુપાસં જિણં ચ ચંદપ્પહં વંદે॥ 2॥

સુવિહિં ચ પુપ્ફદંતં, સીઙ્ગલ, સિજ્જંસ, વાસુપુજ્જં ચ

વિમલમણંતં ચ જિણં, ઢમ્મં સંતિં ચ વંદામિ॥ 3॥

કુંથું ડરં ચ મલ્લિં, વંદે મુણિસુવ્વયં નમિજિણં ચ।

વંદામિ રિઙ્ગેમિં, પાસં તહ વહ્ધમાણં ચ॥ 4॥

એવં મણ્ઑ ડશિથુઙ્ગા, વિહુય રય-મલા પહીણ-જર મરણા।

ચડવીસં પિ જિણવરા, તિત્થયરા મૈ પસીયંતુ॥ 5॥

કિત્તિય વંદિય મહિયા, જે ઀ લોગસ્સ ડત્તમા સિહ્ધા।

ઢારુગ્ગ-બોહિ-લાશં, સમાહિવરમુત્તમં દિંતુ॥ 6॥

ચંદેસુ નિમ્મલયરા, ઢાઙ્ગચ્ચેસુ ડહિયં પયાસયરા।

સાગર વર ગમ્મીરા, સિહ્ધા સિહ્ધિ મમ દિસંતુ॥ 7॥

(ફિર સ્વમાસમણ દીજિણ)



फिर 'नमो अरिहंताणं' कहते हुए काउसग्ग पार कर, प्रकट लोगस्स पढ़ें तथा खड़े रह कर निम्नलिखित पाठ पढ़िये-

खमासमण सूत्र

तदन्तर दोनों हाथ, दोनों घुटने तथा मस्तक भूमि पर टेक कर पंचांग प्रणाम करते हुए तीन खमासमण दीजिए ।

इच्छामि खमासमणो! वंदितुं जावणिज्जाए,
निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।
इच्छामि खमासमणो! वंदितुं जावणिज्जाए,
निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।
इच्छामि खमासमणो! वंदितुं जावणिज्जाए,
निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।



(चित्र में प्रदर्शित स्थिति के अनुसार दाहिने घुटने को जमीन पर टेक कर बायां घुटना सीधा खड़ा कीजिए, दोनों हाथ जोड़ कर दोनों हाथों की अंगुलियां 'योग मुद्रा' सहित बराबर एक-दूसरे हाथ की अंगुलियों के बीच-बीच में मिलाइये। दोनों अंगूठों को समान स्थिति में रखकर कुहनियां पेट से लगाकर बैठिये और कहिये)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! चैत्यवंदन करुं ? इच्छं ।

अब पूर्वाचार्य कृत निम्नलिखित एक चैत्यवंदन पढ़िए।

चैत्यवंदन

सकल कुशल वल्ली, पुष्करावर्त्त मेघो, दुरित तिमिर भानुः, कल्प वृक्षोपमानः ।

भव-जल-निधि-पोतः, सर्व-सम्पत्ति-हेतुः, स भवतु सततं वः
श्रेयसे शान्तिनाथः ॥ श्रेयसे पार्श्वनाथः



॥ श्री तीर्थों का चैत्यवंदन ॥

आज देव अरिहंत नमूं, सिमरुं तारु नाम। जहां जहां प्रतिमा जिनतणी, तहां-तहां करुं प्रणाम ।
शत्रुंजय श्री आदिदेव, नेम नमूं गिरनार। तारंगे श्री अजितनाथ, आबू ऋषभ जुहार ॥
अष्टापद गिरी ऊपरे, जिन चौबीसे जोय । मणिमय मूरति मानसुं भरत भरावी सोय ॥
सम्मेतशिखर तीर्थ बड़ो, जहां बीसे जिनपाय। वैभारिक गिरि ऊपरे, श्री वीर जिनेश्वर राय ।
मांडवगढ़ नो राजियो, नामे देव सुपास। ऋषभ कहे जिन समरतां, पहुंचे मन की आस ॥

॥ जंकिंचि सूत्र ॥

जंकिंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
जाइं जिणबिंबाई, ताइं सब्बाइं वंदामि ॥

14. नमुत्थुणं सूत्र

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ।
पुरिसुत्तमांण, पुरिस सीहाणं, पुरिस वर पुंडरीआण, पुरिस वर गंध हत्थीणं ।
लोगुत्तमांण, लोग नाहाणं, लोग-हियाणं, लोग पईवाणं, लोग पज्जोअगराणं ।
अभय-दयाणं, चक्खु दयाणं, मग्ग दयाणं, सरण दयाणं, बोहि दयाणं ।
धम्म दयाणं, धम्म देसयाणं, धम्म नायगाणं, धम्म सारहीणं, धम्म वर चाउरंत चक्कवट्टीणं
अप्पडिहय वरणाण दंसणधराणं वियट्ट छउमाणं । जिणाणं जावयाणं
तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ।
सव्वन्नूणं सव्व दरिसीणं, सिव मयल मरुअ, मणंत मक्खय
मव्वाबाह मपुणरावित्ति, सिद्धिगई नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं
नमो जिणाणं जिअ भयाणं जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविसन्ति
णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सब्बे तिविहेण वंदामि



भावार्थ: इस सूत्र द्वारा शक्रेन्द्र अरिहंत भगवान की उनके
सर्वश्रेष्ठ गुणों के वर्णन से स्तुति करते हैं।



जावंति चेइयाइं सूत्र

जावंति चेइयाइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ-लोए अ,
सब्बाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं
भावार्थ: इस सूत्र से तीनों लोक में स्थित सर्व जिन चौत्थों को
नमस्कार किया जाता है।

जावंत केवि साहू सूत्र

जावंत के वि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ,
सब्बेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं
भावार्थ:- इस सूत्र में सभी भरत, ऐरावत और महाविदेह क्षेत्र में स्थित
सर्व श्रमणों को नमस्कार किया जाता है।

पंच परमेष्ठी नमस्कार सूत्र

नमोर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्य
भावार्थ: श्री सिद्धसेन दिवाकर सूरि द्वारा -ष्टिवाद नामक पूर्व में से उद्धृत
इस सूत्र से श्री पंच परमेष्ठी को नमस्कार किया गया है।

उवसग्गहरं स्तोत्र

उवसग्गहरं पांस, पासं वंदामि, कम्म घण मुक्कं ।
विसहर विस निन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं ।
विसहर फुलिंग मंतं कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तरस्स गह रोग मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ।
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहु फलो होइ ।
नर तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ।
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पप्पायव-ब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं
इअ संथुओ महायस भत्तिब्भर निब्भरेण हियएण ।
ता देव दिज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद

भावार्थ: श्री भद्रबाहु स्वामी द्वारा रचित इस सूत्र में सर्व विघ्नों को दूर करने वाले
श्री पार्श्वनाथ प्रभु के गुणों की स्तुति की गयी है।



जय वीयराय सूत्र

जय वीयराय जग गुरु होउ ममं तुह पभावओ भयवं
भव निव्वेओ, मग्गाणुसारिया इट्टु फल सिद्धि
लोग विरुद्धच्चाओ गरुजण-पूआ
परत्थ करणं च, सुहगुरु जोगो
तव्वयण सेवणा, आभवमखंडा,
वारिज्जइ जइ वि नियाणं-बंधणं वीयराय! तुह समये
तहवि मम हज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ
समाहि मरणं च बोहि लाभो अ
संपज्जऊ मह एअंतुह नाह पणाम करणेणं
सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणम्
प्रधाणं सर्व धर्माणां, जैन जयति शासनम्
भावार्थ : इस सूत्र द्वारा प्रभु से आत्म कल्याण के लिए निर्दोष एवं उत्तम
तेरह प्रार्थनायें की गयी हैं।

अरिहंत चेइयाणं सूत्र

अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं, वंदण-वत्तिआए, पूअण-वत्तिआए
सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए, बोहिलाभ-वत्तिआए ।
निरुवसग्ग-वत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धीईए, धारणाए, अणुप्पेहाए
वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ।

भावार्थ: इस सूत्र में जिन प्रतिमाओं की आराधना
के लिए काउस्सग्ग करते समय की भावनाओं का वर्णन है।



कल्लाण कंदं

कल्लाणकंदं पढमं जिणिंदं
संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं,
पासं पयासं सुगुणिककठाणं,
भत्तीइ वंदे सिरि-वद्धमाणं..... 1

अपार संसार समुद्धपारं,
पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं,
सव्वे जिणींदा सुरविंदवदा,
कल्लाण-वल्लीण-विसाल कंदा.....2

निव्वाण-मग्गे वर-जाण-कप्पं,
पणासिया सेस कुवाइ-दप्पं
मयं जिणाणं सरणं बुहाणं,
नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं,3

कुंदिंदु-गोक्खीर-तुसार-वन्ना,
सरोज-हत्था-कमले-निसन्ना,
वाएसिरी पुत्थय-वग्ग-हत्था,
सुहाय सा अम्ह सया पसत्था.....4



C- विधि विभाग

1. चैत्यवंदन विधि

(चैत्यवंदन यह भाव पूजा है, अतः इसके प्रारम्भ में तीन बार निसीहि बोलनी चाहिए।)

1. सबसे पहले खमासमण सूत्र बोलकर एक खमासमण देना

2. फिर नीचे के सूत्र खड़े रहकर बोलना-

इरियावहियं सूत्र, तस्स उत्तरी करणेणं सूत्र, अन्नत्थ ऊससिएणं सूत्र

3. इसके बाद "एक लोगस्स न आवे तो चार नवकार का काउस्सग्ग करके हाथ जोड़कर लोगस्स सूत्र बोलना।

4. फिर खमासमण सूत्र अलग अलग तीन बार बोलकर तीन खमासमण देकर बाद में यह आदेश मांगना

5. इच्छाकारेण संदिसह भगवान ! चौत्यवंदन करुं? इच्छं (कहकर (स्मजि) बाया पैर खड़ा करके बैठकर नीचे का सूत्र हाथ जोड़कर बोलना)

6. सकलकुशलवल्ली पुष्करावर्तमेघो, दुरिततिमिर भानुः कल्पवृक्षोपमानः
भवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स भवतु सततं वः श्रेयसे शांतिनाथः
श्रेयसे पार्श्वनाथः॥

7. फिर चैत्यवंदन बोलना (हो सके वहां तक मूलनायक भगवान का चौत्यवंदन बोलना)

8. फिर जंकिंचि सूत्र, नमुत्थुणं (शक्रस्तव) सूत्र बोलना

9. फिर ललाट पर दोनो हाथ जोड़कर जावंति चेइयाइं सूत्र बोलना

10. फिर खमासमण देकर ललाट पर दोनो हाथ जोड़कर जावंत केवि साहू सूत्र बोलना

11. फिर नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व साधुभ्य बोलकर स्तवन बोलना
(न आवे तो उवसग्गहरं सूत्र बोलना)

12. फिर ललाट पर दोनों हाथ जोड़कर जयवीयराय सूत्र बोलना।

13. बाद में खड़े होकर श्री अरिहंतचेइयाइं सूत्र बोलना।



13. बाद में खड़े होकर श्री अरिहंत चेइयाणं सूत्र बोलना।
14. फिर अन्नत्थ सूत्र बोलना, बाद में एक नवकार का काउस्सण्ण करके नमोऽर्हतं बोलकर स्तुति बोलना।
15. बाद में एक खमासमण देकर पच्चक्खाण का आदेश मांगना - इच्छकारी भगवान पसाय करी पच्चक्खाण नो आदेश देजोजी। (फिर यथाशक्ति पच्चक्खाण करना)
16. फिर आव्यो शरणे तुमारे... इत्यादि स्तुति बोलकर परमात्मा को मोती अथवा चावल से वधाणा चाहिए।
17. फिर एक खमासमण देकर दांया हाथ जमीन पर एवं बांया हाथ मुंह के पास रखकर निम्न वाक्य बोलना विधि करता जो कुछ अविधि, आशातना हुयी हो, उसके लिए मन, वचन, काया से मिच्छामि दुक्कडं ।
18. अंत में जिनशासन देव की जय हो ऐसा बोलना चाहिए।





दोहे

ज्ञान कलश भर आत्मा, समता रस भरपूर
श्री जिन ने नहवरावता, कर्म धाए चकचूर ।
मेरुशिखर नहवरावे होसुर पति, मेरुशिखर नहवरावे,
जन्मकाल जिनवर जी को जानी, पंचरूप करी आवे ।

1. जल पूजा

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व-साधुभ्यः
गंगा नदी फुनि तीर्थ-जल से कनकमय कलशे भरी ।
निज शुद्ध भावे विमल थावे न्हवन जिनवर को करी ।
भव-पाप-ताप निवारणी प्रभु-पूजना जग हितकारी,
करुं विमल आत्म कारणे व्यवहार निश्चय मन धरी ॥

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलं यजामहे
स्वाहा।

2. चन्दन पूजा

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व-साधुभ्यः
सरस चन्दन घसिय केसर भेली मांही बरास को,
नव प्रंग जिनवर पूजते भवि पूरते निज आस को ।
भव पाप-ताप निवारणी प्रभु पूजा जग हितकारी,
करुं विमल आत्म कारणे, व्यवहार निश्चय मन धरी ॥

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे
स्वाहा।



3. पुष्प पूजा

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व-साधुभ्यः
सुरभि अखंडित कुसुम मोगरा आदि से प्रभु कीजिये,
पूजा करी शुभ योग तिग-गति पंचमी फल लीजिये ।
भव-पाप-ताप निवारणी प्रभु-पूजना जग हितकारी,
करुं विमल आतम कारणे व्यवहार निश्चय मन धरी ॥

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय पुष्पानि यजामहे स्वाहा।

4. धूप पूजा

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व-साधुभ्यः
दशांग धूप धुखाय के भवि धूप पूजा से लिये,
फल ऊर्द्धगति सम धूप दही निज पाप भव-भव के किये ।
भव-पाप-ताप निवारणी प्रभु पूजना जग हितकारी,
करुं विमल आतम कारणे व्यवहार निश्चय मन धरी ।

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा।

दीप पूजा

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व-साधुभ्यः
जिम दीप के प्रकाश से तम चोर नासे जानिये,
तिम भाव दीपक नाण से अज्ञान नास वखानिये।
भव-पाप-ताप निवारणी प्रभु पूजना जग हितकारी,
करुं विमल आतम कारणे व्यवहार निश्चय मन धरी ।

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय दीपं यजामहे स्वाहा।



गुरु वल्लभ भजन

श्री वल्लभ गुरु के चरणों में, मैं नित उठ शीश नवाता हूं।
मेरे मन की कली खिल जाती है, जब दर्श तुम्हारा पाता हूं।
मुझे वल्लभ नाम ही प्यारा है, इस ही का मुझे सहारा है।
इस नाम में ऐसी बरकत है, जो चाहता हूं सो पाता हूं।
जब याद तेरे गुण आते हैं, दुःख दर्द सभी मिट जाते हैं।
मैं बनकर मस्त दीवाना फिर, बस गीत तेरे ही गाता हूं।
गुरु-राज तपस्वी महामुनि, सरताज थे तुम महाराजों के।
मैं इक छोटा सा सेवक हूं, कुछ कहता हूं शर्माता हूं।
गुरु-चरणों में है अर्ज यही, बढ़ती दिन रात रहे भक्ति।
मेरा मानुष जन्म सफल होवे, यही भक्ति का फल चाहता हूं।